हरीन्द्र विद्यार्थी

जन्म : 25 दिसम्बर 1948

आवास : यौधेय भवन, तिलकनगर, रुकनपुरा, बेली रोड, पटना-14

सिच्छा : मगही (एम.ए.)

सम्प्रति : अध्यापक श्री गि० कु० उ० वि०, मसौढ़ी, पटना

सम्पादन : मसौढ़ी आवाज

सम्मान/पुरस्कार :

1996 : भारतीय दलित साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा 'डॉ० अम्बेडकर फेलोशिप एवार्ड से सम्मानित ।

2000 : पारिजात साहित्य परिषद द्वारा 'शंकर दयाल सिंह शिखर सम्मान'।

2001 : 'डॉ० राम प्रसाद सिंह साहित्य पुरस्कार' (मोरहर के पार) कविता संग्रह ला)

2002 : राजभाषा विभाग, बिहार सरकार द्वारा 'पं० मोहन लाल महतो वियोगी पुरस्कार' से सम्मानित ।

2004 : बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा कविता ला 'हिन्दी साहित्य सेवा पुरस्कार' से पुरस्कृत।

परकासित रचना :

1. दमाही में जोतल अदमी (मगही कविता संकलन)
2. मोरहर के पार (मगही कविता संकलन)

3. मगध गुर्रा रहल (मगही कविता संकलन)

4. फल्गु से गंगा (मगही कविता संकलन)

5. बहेलियों के नगर में (हिन्दी कविता संकलन)

'अनुकम्पा' कहानी में हरीन्द्र विद्यार्थी बेरोजगारी के समस्या के माध्यम से समाज के पतनसील हालत के प्रस्तुत करलन हे। आर्थिक स्थिति के बदलेला बेटा अप्पन बाप के भी हत्या करे से न चूके। इहाँ तक कि दहेज रूपी दौलत बार-बार वसूलेला अप्पन पत्नी तक के मार देहे। ई कहानी में दहेज के समस्या आउ हिंसा जइसन असमाजिक आउ अमानवीय भावना के प्रति धेयान दिलावल गेल हे। बेरोजगारी के दंस अदमी के गर्त में भी धकेल देहे। अंत में माय के विसाल हिरदय के परिचय देवल गेल हे जे अप्पन बेटा के सब अवगुन के पी जाहे आउ वात्सल्य प्रेम में भुला जाहे।

अनुकम्पा

'बड़ी तकदीरवला निकललन पाँड़े जी ! कहावतो हे छोटा परिवार, सुखी परिवार, सिरिफ दू गो बेटा, चनेसर आउ दिनेसर।'—रमेसर बोललक।

'हँऽ भाई ! बेटी के कउनो झंझट नयँ, दहेज के जोगार के सवाले कहाँ ? बस जे कमयलन ऊ परिवारे ला।'—संकर हँऽ में हँऽ मिलयलक।

'बेटी रहतइन हल तब न आटा-दाल के भाव मालूम पड़तइन हल। कई जोड़ा जूता टुटिए जतइन हल !'

'अरे का मालूम पड़तइन हल ? नौकरीवाला इंतजाम करहीं लेवऽ हइ। अब तो सिरिफ डेढ़ बरिस रिटायरमेंट के रह गेलइन हे। ओकरा बाद अराम से पेंसन भोगतन।'

'सरकारी नौकरी में एही न हइ, बुढ़ारी भी चैन से कट जा हइ। बड़को बेटा बड़ा लायक निकसलइन। बाप के बड़ा खेयाल रक्खऽ हइ ।'—संकर बोललक।

सुरुजदेव छितिज के ऊ पार छलाँग लगा चुकलन हल। अन्हरिया होहीं पर हल। तेज उड़ान भरइत चिरईं, बसेरा दन्ने उड़ल जा रहल हल। रमेसर आउ संकर पाँड़ेजी के सफलता से जलइत-भुनइत अप्पन-अप्पन घरे चल गेलन।

एक दिन भिनुसरवे मोरंगपुर गाँव में कोहराम मच गेल। धनेसर पाँड़े चल

बसलन। बड़का लड़का चनेसर बाबूजी के मउअत पर जार-जार होके रो रहल हल। अन्हरिया रात के फयदा उठाके कोई उनकर दलान पर सुतले में हत्या कर देलकइन। चनेसर के माय छाती पीट रहल हल, 'रजवा हो रजवा ! केकरो न दुस्मनवाँ, कउन परान हर लेलक हो राम ?'

गाँव वालन ई हिरदय-विदारक दिरिस देख के हक्का-बक्का रह गेलन। लोग चनेसर के ढाढ़स बँधयलन। पड़ोसी लोग बाँस-बल्लम आउ कफन के तइयारी में जुट गेलन। बाँस-घाट ले जाके लास के अंतिम करिया पूरा करल गेल।

सराध में चनेसर के माय खूब खरच करलन। अंगुरी चाटइत रघु ठाकुर बोललन 'न जानी कउन जालिम एत्ता सरीफ अदमी के जान से मार देलकइ। बड़ी मिलनसार हलथिन पाँड़ेजी। न कउनो बेमारी हलइन, न तकलीफ। पता न काहे विधाता अच्छा अदमी के एत्ता जल्दी बोला ले हे ?'

'बहुत लोग तो बेमार होके बिस्तर पर महिन्नो अभुरायल रहऽ हथ आउ कोई सुध लेवे वला भी न रहइन। घरहीं के लोग के दुत्कार-तिरस्कार सुनते जिनगी गुजरऽ हे। पता न केकरा से अदावत हलइन ? खैर, पाँड़ेजी चलते-फिरते चल गेलन !' रसगर जलेबी के चटखारा लेवित तपेसर पासवान बोललक।

'कहियो गाँव में केकरो से मास्टर साहेब के झगड़ा सुनलहुन ?' बड़ी मिट्ठा बोलऽ हलथिन बेचारा !' ठाकुर हुँकार देते बोललक।

सराध खतम हो गेल। कई महीना दउड़-धूप के बाद अनुकंपा के अधार पर चनेसर के नौकरी सँकरी इस्कूल में हो गेलइ। समय के गाड़ी एक मौसम के बाद दूसर मौसम में बढ़े लगल। नौकरी पेसा लड़का के नाम सुनके मालदार जजमान, चनेसर के ड्योढ़ी पर दस्तक देवे लगल। चनेसर के माय ट्रलान के टेबुल-कुर्सी से सजा देलन। इस्टील के नया बर्त्तन, चाय-ट्रे, कप आदि के खरीदारी भेल। जादेतर लोग के घर-परिवार तो पसंद आयल, बाकि दहेज के माँग सुनके ढेर मेहमान बिदक गेल। आखिर एगो पंडीजी डाक बोल के लड़का खरीद लेलन। धूमधाम से लोग पांडेचक बरियाती गेल। लड़की के पिता बरियाती के खूब आवभगत कइलक। धनी ससुराल पाके चनेसर निढाल हो गेल। बरियाती मोरंगपुर लउट आयल। वर-वधु के बधाई देवेला चनेसर के घर में ताँता लग गेल।

कुछ बरिस के बाद चनेसर के घर में एगो लड़का जनम लेलक। धीरे-धीरे दिनेसर भी बालिग हो गेल। गाँव वालन समझयलक कि पेंसन के पूरा रकम चनेसरे

निगलित जाइत हउ। दिनेसर के लगल कि लोग ठीके कहइत हथ। एक दिन ऊ हिम्मत करके चनेसर से पेंसन में हिस्सा माँगलक। चनेसर ओकरा समझयलक—'घर के बेवस्था तो हमरे करे पड़ऽ हे। ई महँगाई में पेंसन कहाँ ठहर पावऽ हे ?'

दिनेसर बोललक—'लटर-पटर न चलतवऽ, बाबूजी खाली तोरे हलथुन कि हमरो हलन, हिस्सा तो हमरा देहीं पड़तवऽ। जेतना दिन चललवऽ ओतना दिन चललवऽ, अब बेइमानी न चलतवऽ।'

दुन्नो भाई झगड़े लगलन। आखिर झगड़ा-झंझट फरिआवे ला पंचायत बइठल। गाँव के लोग दुन्नों भाई में पेंसन आधा-आधा बाँट देलन। माय छोटका साथे रहे लगल।

एन्ने सँकरी गाँव में एगो विधवा के बेटी से चनेसर के आँख चार होवे लगल। इस्क के बोखार माथा पर भूत बनके नाचे लगल। कभी-कभी ऊ हफ्तो मोरंगपुर न लउटे। मेहरारू के चिंता बढ़े लगल। चनेसर टालीगंज में डेरा लेके रहऽ हल। तिरिया के न रहल गेल, ऊ टालीगंज जायला जिद करे लगल। काफी नाकड़-नुकुड़ करला के बाद ऊ घरनी के साथे ले जायला तइयार हो गेल। घरनी सोनिया नया साड़ी झमकयलक। गहना-गुड़िया में सज-सँवर के ऊ पति के साथे बजार दन्ने चल पड़ल। चनेसर ओकरा बिहटा में सिनेमा देखावे के बात कहलक। सोनिया के खुसी के ठेकाना न हल। टिकस कटा के दुन्नो फिलिम देखलन। फिलिम खतम होला पर चनेसर बोललक—'हमनी गाँव चलीं।'

सोनिया आनाकानी कयलक—'गाँव बहुत दूर हे, कुबेर हो जायत।' चनेसर के दबाव के आगे सोनिया वापस घरे चलेला राजी हो गेल। दुन्नो सहर से निकस के गाँव दन्ने चल पड़लन। सुनसान जगह देख के चनेसर सोनिया के साथे एगो बरगद के पेड़ के नीचे रुक गेल।

अचानक एगो औरत के चिल्लाय के अवाज अकास में गूँज उठल, 'बचावऽ ...बचावऽ ...कोई हे, अरे मार डाललक ! ...बाप रे बाप ...!'

सूरज डूबे में अभी देरो हल। दूर खेत-बधार में हरवाहा हर जोतित हलन। कुछ चरवाहा भइँस लेके घरे लउट रहलन हल। मेहरारू के चिकरे के अवाज सुनके ऊ लोग डंडा-पैना लेके बरगद के पेड़ दन्ने दउर पड़लन। लोग चनेसर के

पकड़ लेलन, बाकि तबतक बहुत देर हो चुकल हल। पेट में बच्चा होवे के चलते सोनिया के परान-पखेरू उड़ चुकल हल। चनेसर गिरफ्तार हो गेल।

सोनिया के मौत के खबर सुनके ओकर माय-बाप भी आ धमकलन। हत्या के रिपोर्ट दर्ज भेल। थाना में चनेसर के जम के पिटाई भेल। चनेसर के इकबालिया बयान सुनके लोग दंग रह गेलन। अनुकंपा पर नौकरी के लालच में ऊ बाप के हत्या भी खुद्दे कयलक हल। गाँव वालन के ओकरा से घिरना हो गेल। कई बरिस ऊ जेल में सड़ल।

अंत में माय के ममता जाग उठल। ऊ सोचलन, 'पति तो चलिये गेलन, कम से कम बेटा के तो बचा लेवल जाए। ऊ कई गो वकील हीं जाके गिड़गिड़यलन, बाकि अइसन छुछुंदर के जमानत करावेला कउन वकील तइयार होवे ? अंत में चनेसर के माय के काफी अनुनय-विनय के बाद बैरिस्टर निधि बाबू जमानत के अर्जी कचहरी में पेस करेला राजी हो गेलन। गाँव वालन कहे लगल—'वाह रे, अनुकंपा के लीला !'

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) 'छोटा परिवार, सुखी परिवार'—ई वाक्य काहे कहल गेल हे ? कारन बतावऽ।

   (ख) 'बुढ़ारी भी चैन से कट जा हइ' संकर के ई कहनाम कहाँ तक ठीक हइ ?

   (ग) 'सराध में चनेसर के माय खूब खरच करलन' ई बात से तूँ कहाँ तक सहमत हऽ ? तर्क देइत समझावऽ।

   (घ) दिनेसर अप्पन भाई से पेंसन में से हिस्सा काहे माँगलक ? तोरा समझ से ई कहाँ तक ठीक हे ?

   (ङ) चनेसर गिरफ्तार काहे हो गेल ?

लिखित :

1. कहानीकार हरीन्द्र विद्यार्थी के परिचय पाँच वाक्य में दऽ।
2. पांडेजी के हत्या काहे ला भेल हल ?

3. चनेसर आउ दिनेसर में कउन बात के चलते तकरार होयल ?
4. चनेसर अप्पन मेहरारू के टालीगंज ले जाये में काहे टालमटोल करऽ हल ?
5. चनेसर के जेल गेला पर ओकरा जमानत करावेला कोई वकील काहे न तइयार हो रहल हल ?
6. चनेसर के माय ओकर जमानत लागी वकील खोजेला काहे तइयार हो गेल ?
7. अनुकम्पा पर नौकरी के नियम से फयदा हे कि हानि ?
8. दहेज-प्रथा के कुप्रभाव लिखऽ ।
9. नीचे लिखल पंक्ति के सप्रसंग व्याख्या करऽ :—

   सूरज डूबे में अभी देरी हल। दूर खेत-बधार में हरवाहा हर जोतित हल। कुछ चरवाह भइँस लेके घरे लउट रहलन हल। मेहरारू के चिकरे के अवाज सुन के ऊ लोग डंडा-पैना लेके बरगद के पेड़ दन्ने दउर पड़लन।

भासा-अध्ययन :

1. कहानी के पाँच गो तत्व बतावऽ ।
2. निम्नलिखित मुहावरा के वाक्य में प्रयोग करऽ ताकि अर्थ स्पस्ट हो जाय :

   (क) आना कानी करना

   (ख) आँख चार होना

   (ग) कोहराम मचना

   (घ) छुछुन्दर के जमात

   (ङ) दंग रह जाना
3. पाठ में आयल मगही के अलावे दोसर भासा के पाँच गो सब्द चुनके लिखऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. पाठ पढ़के पाठक के मनोदसा पर जे प्रभाव पड़ रहल हे, ओकरा तीन वाक्य में बतावऽ ।
2. ई कहानी में सबसे अच्छा पात्र तोरा समझ से जे हे, ओकरा पर एगो संक्षेप में लेख लिखऽ।

सब्दार्थ :

बुढ़ारी	—	बुढ़ापा
छलाँग	—	फाँदना
भिनुसार	—	भोर
छाती पीटना	—	जोर-जोर से रोना
मालदार	—	अमीर
इस्क	—	प्यार
चिकरना	—	रोना-चिल्लाना